धर्म-काल, गति, प्रकृति और परिवर्तन
(खंड-दो)

क्राइस्ट पूर्व 5000 वर्ष और अब तक 2000 वर्ष के कुल 7000 वर्षों के मानव विकास क्रम में धर्म, समाज, राज्य संचालन एवं उसमें विज्ञान के क्रमिक विकास के द्वारा मानव चेतना, ज्ञान एवं विवेक में परिवर्तन आया। देश, काल, परिस्थितियों की समझ और दृष्टिकोण में क्रान्तिकारी बदलाव हुआ।

अब उस बदलाव के अनुसार वर्तमान के धर्म, मूल्य, नीतियों और उसके समाज में समायोजन द्धाचचसपबंजपवदक्ष में भी समयोचित बदलाव किया जाना आवश्यक है। धर्म की तरह ही विज्ञान अब 700 करोड़ मानव में स्वीकार्य है। यदि धर्म ने विज्ञान को स्वीकार द्वारा अपने में समायोजित नहीं किया तो अब 700 करोड़ मानव, धर्म के साथ विद्रोह-बगावत करके विज्ञान को ही धर्म की जगह स्वीकार कर लेंगे। युवा वर्ग में यह परिवर्तन दिखाई देने लगा है। परन्तु धर्म क्षेत्र इसे अनदेखा कर रहा है। धर्म आज के युवावर्ग को दिशा और मार्गदर्शन दे पाने में असमर्थ प्रतीत हो रहा है।

पूरी मानव जाति के भिन्न-भिन्न धार्मिक विश्वास, वैज्ञानिक प्रमाणों और धार्मिक-वैज्ञानिक अन्वेषणों के अनुसार प्रकृति एवं ब्रह्माण्ड की संचालक शक्ति और चेतना केवल एक है और किसी भी पैमाने पर एक से अधिक नहीं हो सकती। इस प्रकार धर्म आर विज्ञान एक-दूसरे में समाहित हैं।

इसका अर्थ हुआ कि उसी एक मूलशक्ति द्वारा ही मानव विकास के आरम्भिक अविकसित चरण से विकास की विभिन्न स्थितियों-परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न काल-गति के अनुसार मूल्य, मानक, नीतियों का जन्म हुआ जो भिन्न-भिन्न धर्मों के रूप मं मानव जाति का मार्गदर्शन करते रहे।

दुनिया के सभी धर्मों में कमोवेश 10 सनातन नियम ज्मद ब्वउउंदकउमदजे मौजूद हैं जिन्हें मूल्य और मानक के रूप में सभी धर्म, विज्ञान और मानव समाज में मान्यता मिली हुई है।

समय की रफ्तार और चेतना के विकास के साथ क्यों न अब केवल एक मूल शक्ति की स्वीकार्यता और स्थापना के साथ पूरी मानव जाति के 700 करोड़ मानवों के द्वारा ग्रहणीय 10 सनातन मूल्यों के साथ एक सर्व-स्वीकार्य धर्म की स्थापना पर विचार करें? मिल-बैठ कर सम्मिलित प्रयास, सहयोग और साझीदारी के आधार पर धार्मिक गरू, शीर्ष वैज्ञानिक और ज्ञानी जन एक प्राकृतिक, ब्रह्माण्डीय धर्म, समाज और शासन व्यवस्था के विकास और उसकी स्थापना का प्रयास कर सकते हैं।

जिस प्रकार से हम बचपन के कपड़े, खिलौने और शौक, जवानी में अनुपयोगी पाकर छोड़ देते हैं, बचपन भी छूट जाता है। 100-200 या 2000 वर्षों के बाद इमारतें रहने योग्य नहीं रहती और नई बनानी पड़ती हैं। पुरानी संस्कृतियां और सभ्यताओं की जगह नई विकसित होती हैं। पुराने समय की कुछ नदियां दजला, फरात और सरस्वती विलुप्त हो गईं। द्वीप-महाद्वीप, महासागरों में बदलाव आये और देश की सीमायें बदल गई। सभ्यताओं के साथ-साथ बहुत से धर्म और जातियां मायन और इन्का सभ्यता आदि भी काल के गाल में समा गई। नई सभ्यताओं और धर्मों का सूत्रपात और उदय हुआ। ईसाई धर्म 2000 वर्ष पूर्व और इस्लाम 1400 वर्ष पूर्व आया और दोनों ने अपने को प्रमाणित किया, स्थापित किया।

किसी भी देश-समाज में मानव, भूतों के साथ और भूतकाल में नहीं रह सकता। हमें भी अपने भूत से छुटकारा पाने का प्रयत्न करना पड़ेगा। बचपन से जवानी में, बचपन छूट जाता है और बुढ़ापे में जवानी विदा ले लेती है। वर्तमान में जीने क लिये भूतकाल से विदा लेना अनिवार्य है।

अतीत को सम्मान, वर्तमान को समाधान और भविष्य को दिशा देना ही हमारा आदर्श हो।

अतः वर्तमान की वैज्ञानिक प्रगति, आज की रफ्तार और चेतना के विकसित स्तर के अनुरूप ही हमें स्वयं अपने धर्म को भी आज के अनुरूप चुनना होगा। वर्तमान की प्रगति और विज्ञान के साथ धर्म को जोड़ना होगा।

अब नये परिप्रेक्ष्य में धर्म की विवेचना की आवश्यकता, जीवन के हर क्षेत्र में महसूस की जा रही है। नये धर्म, समाज, उसके मूल्य, नीतियां और उनके आधार पर शासन-संचालन व्यवस्था की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता।

धर्म की विवेचना

धर्म को समझने और विवेचित करने के लिये उसे तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है :

1. जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य या आस्थायें (Values-Ethics) : यह धर्म का प्राकृतिक और सनातन स्वरूप है जिन्हें सनातन मूल्य